International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 23-02-2026, Accepted: 25-03-2026, Published: 09-04-2026
Volume 12, Issue 2, 2026, Page No. 26-27

महीप सिंह के कथा साहित्य में वृद्ध समाज

श्रवण लाल सेन[1], डॉ. राम कृष्ण शर्मा[2]
[1] शोधार्थी हिन्दी विभाग, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत
[2] शोध निर्देशक, हिन्दी विभाग, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश
यह शोध पत्र महीप सिंह के कथा साहित्य में निहित वृद्ध समाज को दर्शाता है। वृद्धों की समाजिक स्थिति, जीवन पद्धति, विचारधारा एवं संवेदनशीलता का विश्लेषण करता है। संवेदनशील कहानीकार महीपसिंह की कहानियों में पारिवारिक, सामाजिक वातावरण, सांस्कृतिक जीवन एवं राजनीतिक परिस्थितियों का चित्रण मिलता है। जिसकी प्रांसगिकता स्वयं सिद्ध है। वे मानवतावादी कहानीकार है उनकी कहानियों की प्रासंगिकता को हमे इस रूप में दिखाई देती है। उनकी रचनाएँ सामान्य जनजीवन की सभी परिस्थितियों की विषय वस्तु लिए हुए है। उन्होंने सामान्य जीवन के अनुभवों को साझा करते हुए रचनाएँ लिखी है। उनकी कहानियों को कालजयी इसीलिए कहा जाता है क्योंकि आजादी के बाद में लिखी गई उनकी कहानियाँ आज भी प्रांसगिक है। बढ़ते भौतिकवाद एवं उपभोक्तावाद में व्यक्ति का जीवन कितना परिवर्तित होता जा रहा है ऐसे में मानवीय एवं नैतिक मूल्यों को सुरक्षित रखना मुश्किल होता जा रहा है। इसका प्रभाव व्यक्ति के साथ–साथ परिवार, समाज, एवं देश पर भी पड़ रहा है।

मूल शब्दः वृद्ध समाज, संवेदनशीलता, धर्म, राजनीति, आर्थिक, रूढ़ियों, आत्मग्लानि, बूढ़ा, पीढ़ी, अकेलापन

मनुष्य सामाजिक प्राणी हैं समाज से विलग होकर वह रह नहीं सकता क्योंकि सामाजिक परिवेश ही उसके समस्त आंतरिक विकास का केन्द्र है। आधुनिक परिवेश में पाश्चात्य–ज्ञान–विज्ञान के प्रचार एवं प्रसार से प्रभावित होकर समाज के राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक सभी क्षेत्रों में प्राचीन रूढ़ियों और बन्धनों के विरुद्ध ज्ञान की दुंदुभी बजने लगी थी। हिन्दी साहित्य में महीपसिंह एक कथाकार, पत्रकार, सम्पादक और मीडिया लेखक के रूप में प्रसिद्ध है। वे एक ऐसे अनुभव के विराट व्यक्तित्व हैं जिनकी कहानियों में व्यक्ति, परिवार, समाज, धर्म, राजनीति और देश की समस्याओं को पर्याप्त स्थान मिला है। उनकी सचेतन दृष्टि पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक समस्याओं को नयी वैचारिक पृष्ठभूमि प्रदान करती है।

साधारणः मानव समूह से समाज बनता है। मनुष्य समाज में रहकर ही जीवन के विविध आयामों को प्राप्त करता हैं। जीवन को सुव्यवथित होकर सुनियोजित रूप देने की इच्छा. परस्पर संबंध. आपसी सहयोग. व्यवहार आदि से समाज का निर्माण हो सका है। व्यक्ति की सुरक्षा के लिए भी समाज व्यवस्था का नियमन किया जाता है। समाज के अभाव में व्यक्ति का कोई अस्तित्व नही रह जाता। सामाजिक संरचना के साथ मानव के विकास का सम्बन्ध है। समाज का संबंध मानव के सामाजिक रूप से है। व्यष्टि और समष्टि एक दूसरे के पूरक होने पर भी मनुष्य–मनुष्य के बीच के संबंधों सेही समाज बनता है। श्री राजेन्द्र प्रसाद व्यक्तियों के समूह से समाज न बनने की बात कहते हैं। उनके मतानुसार–''व्यक्ति से मिलकर तो भीड़ बनती हैं। ईट मकान की इकाई जरूर है लेकिन ईट मिलकर मकान नहीं ढेर बनता है। असल में मकान बनता है–ईट–ईट के बीच का संबंध हैं। व्यक्ति–व्यक्ति के बीच का संबंध समाज बनाता है संबंध ही वह कड़ी है जो व्यक्ति और समाज के अस्तित्व, को विकास और प्रगति को सार्थक करता हैं।''[1] ''महीपसिंह का जन्म उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिलेकी अजगैन तहसील के नयी–सराय गाँव में 15 अगस्त 1930 में हुआ।''[2]

राजनीति में बूढेपन का व्यंग्य: मूल्यहीन होती राजनीति में बूढे नेताओं ने कुर्सी को कसकर पकड रखा है। भारत युवाओं का देश है और उसका नेतृत्व बहुत हद तक बूढे नेता करते है। नौकरीपेशा आदमी सरकार की तरफ से आठ साल में रिटायर कर दिया जाता है लेकिन नेताओं को कोई रिटायर नही कर सकता। महीप सिंह ने 'सुर' कहानी में बूढे नेता पर व्यंग्य करते हुए कहा है ''देश की राजनीतिक पार्टियों के नेताओं के रिटायर होने की तो कोई उम्र ही नहीं जिसके पैर कब्र में लटके हुए है उसे अगर पता लग जाए कि सरकार में कोई ऊँचा ओहदा मिलने की संभावना है तो वह एकदम नौजवान घोड़े की तरह दौड़ना शुरू कर देता है।''[3]

परंपरागत सामाजिक व्यवस्था में बूढों के प्रतिः ''श्रद्धा व आस्था का स्वर स्वयं में एक मूल्य था। इसी से संयुक्त परिवार बने हुए थे और उसमें घर के बड़े–बूढ़ों की एक विशेष सम्माननीय स्थिति थी।''[4] आज के एकाकी जीवन में अब संयुक्त परिवार का अस्तित्व खतरे में नजर आ रहा है। एकल परिवार ने आज अपने पैर पसार लिए है। आज के युग में संयुक्त परिवार की बात करता भी अनुचित माना जाने लगा है। ''हिन्दी कहानी में बुजुर्ग पीढ़ी तथा नई पीढ़ी के बीच आए अंतर को लेकर अनेक कहानियों का सृजन किया गया हैं। महीपसिंह की कहानियों में वृद्ध जीवन का परम्परावादी, संवेदनशील, उदारवादी, दया, करुणा, ममता, वात्सल्य से भरा''[5] तथा इसी प्रकार के अन्य अनेक रूपों का मार्मिक चित्रण हुआ है।

'कीचड़' कहानी के पंडित जी हेडमास्टरजी से रिटायर हुए आठ वर्ष बाद भी अपनी गृहस्थी चलाने के लिए ट्यूशन पढ़ाते है। बुढ़ापे में भी उन्हें कोई मानसिक शान्ति, शारीरिक स्वास्थ्य नहीं है। वह इतने बूढ़े हो गए हैं कि नाममात्र का कोई दाँत उनके मुँह में बचा है। उनका एकमात्र बेटा रमन हजार मील दूर बैठा जिन्दगी से जूझ रहाहै। बम्बई में रहते हुए वह इतना भी समय नहीं निकाल पाता कि माता–पिता को एकाध पत्र ही लिख दें। बेटे के दूर रहने के कारण ही वृद्ध माता–पिता को अपने बचे जीवन में संघर्ष करना पड़ता है।

कितने संबंध मिसेज खन्ना के उलझे हुए मानसिक स्तरों को उद्घाटित करने वाली कहानी है। बुढ़ापे मे वृद्ध पति के मर जाने पर सौतेले बेटे और उसकी पत्नी से तालमेल न बैठ पाने के कारण मिसेज खन्ना को अपने चारो ओर फैले भ्रमजाल के

बावजूद हतोत्साहित हुए बिना संघर्ष करना पड़ता है। जिन्दा रहने के लिए उसे अपने सामने खड़ी अनेक चुनौतियों के सामने तन कर खड़ा होना पड़ता है। बेटे के अमानवीय व्यवहार से वह दुखी होती है– ''सतिंदर और उर्मिल अब उनकी रत्ती भर परवाह नहीं करते। उनके सीधे मुँह बात भी नहीं करते। खाने को दो रोटियाँ उनके आगे इस तरह डाल देते है जैसे लोग कुत्तों के आगे डाल देते है।''[6] मिसेज खन्ना को पति की मौत का सदमा सहकर भी सौतेले बेटे सतिंदर और बहू उर्मिल द्वारा उसके अपने मकान पर अधिकार कर लेने की घटना को भी झेलना पड़ता है। बदहाली से गुजरते हुए भी वह टूटती नहीं, खर्च करने के लिए बहू–बेटे से रुपये न मिलने पर उसे बुढ़ापे में नौकरी करनी पड़ती है।

'पड़ोसी' कहानी के वृद्ध बाबू यंत्रवत् जीवन जीने वाले बम्बई जैसे शहर में भी मानवीयता बनाये रखते हैं। पड़ोसी त्रिभुवन का दुख–तकलीफ में, बीमारी में बहुत ध्यान रखते है। उन्हीं की सेवा के कारण त्रिभुवन बीमारी से उबरता है। इसीकरण से त्रिभुवन की पत्नी शान्ता कृतज्ञता के कारण उनका सम्मान कर बहुत सेवा करती है।

'अवश' कहानी में बूढे चाचा की स्थिति कुछ–कुछ आवारा कुत्ते जैसी है। वह कभी रिश्तेदारों के यहाँ, उनके पड़ोसियों के घर कभी किसी मन्दिर, गुरुद्वारों में मारा–मारा फिरता है। इससे उसे लोगों द्वारा अपमानित होना पड़ता है। चाहकर भी चाचा लोगों से संबंध नहीं बना पाता। नैरेटर की पत्नी तो फिर भी उसकी कुछ सेवा कर देती है लेकिन पति को यह बात बिल्कुल अच्छी नहीं लगती– ''मेरी यह समझ में नहीं आता कि मिसेज सेठी का चाचा, तुम्हारा चाचा कैसे बन गया', पति बोला तुम भला उसकी इतनीसेवा क्यों करती हो, एक बार दुत्कार दो तो दुबारा यहाँ अपनी सूरत भी नहीं दिखाएगा।''[7] जैसे चाचा कोई आदमी न होकर कुत्ता हो जिसे दुत्कार–फटकार कर बाहर कर दिया जाता है। आज अपने पराये हो जाते हैं तब ऐसे में बूढ़े चाचा का तो इस दुनिया में कोई नहीं है। फिर भी वह सारी दुनिया की चिन्ता करता रहता है। लोगों में प्रसाद के साथ प्रेम बांटता है।

'कल' कहानी की विधवा जस्सी को बेटे इन्दर ने कनाडा में बस जाने के कारण दिल्ली में अकेला रहना पड़ता है। जिसे अपना कह सके ऐसा कोई भी तो उसके आस–पास नहीं है। क्योंकि कनाडा में रहने वाला बेटा साल में दो बार कार्ड द्वारा माँ को याद कर लेने की औपचारिकता भर निभाता है। ऐसे में जस्सी का हर आने वाला कल एक बड़ा शून्य लेकर आता है। वह किसके लिए जीए? क्यों जीए, इन प्रश्नों का उसके पास कोई उत्तर नहीं होता है। वह अपनी एक सहेली से कहती है कि– ''इन्दर नियमित रूप से मुझे याद करता है। दिसम्बर में उसका नए साल की शुभकामनाओं वाला कार्ड आ जाता है। जून में मुझे वह मेरे जन्म दिन पर एक कार्ड भेजता है। कनाडा में बैठा हुआ बेटा.... बहू साल में दो बार अपनी बढ़ी .... विधवा माँ को याद कर लें, यह कोई छोटी बात नहीं।''[8]

'दिन' कहानी में बूढ़े माँ–बाप संतान के लिए अनावश्यक बोझ बन जाने से दयनीय स्थिति में जीते हैं। दो लड़के होने के बावजूद उनके खाने–पीने और रहने की ठीक व्यवस्था नहीं हो पाती। वद्ध जीवन को बार–बार विस्थापित होना पड़ता है। दोनों ही लड़के उन्हें बारी–बारी से रखते हैं। बड़ा बेटा बूढ़ों को एक महीना ही अपने साथ रखने की बात कहता है। पत्नी ने यह सूचना देने से बूढ़े की त्योरियाँ तन जाती हैं। वह कहता है कि– ''पिछले आठ–दस साल से तो हम छोटे के साथ ही हैं। उसका काम–रोजगार भी नहीं हैं, फिर भी वह जितना बन पड़ता है, हमारी देखभाल करता है। बड़ा दो महनी में ही हमसे तंग आ गया है। बड़ी बहू को हम दो अपाहिजों को अपने साथ रखना बहुत भारी पड़ता है। उसकी सहेलियाँ आती हैं।''[9] वह गंभीर होते हुए कहते है। कि ''न चाहते हुए भी हम उनके सामने पड़ जाते हैं–उसे शर्मिदगी उठानी पड़ती है। इससे शर्म की क्या बात? बूढ़े माँ–बाप कोसाथ रखने में शर्म क्यों महसूस होती है?''[10]

निष्कर्ष कि रूप में कह सकते है कि महीप सिंह के कथा साहित्य में वद्ध समाज की दारुण दशा का वर्णन हुआ है। आधुनिक परिवेश में लोगों ने बद्धों को बेकाम की चीज मान लिया है और उन्हें जीवन के अंग से पृथक कर दिया है।

संदर्भ

1. डॉ. सरिता शुक्ला, युग चेतना और अभिव्यक्ति, उद्घृत धर्मवीर भारती, पृ. 25
2. डॉ. हनुमंत दत्तु शेवळे, महीप सिंह की कहानी कला और समकालीन जीवन, पृ0 21
3. डॉ. महीपसिंह, संबंधों का सन्नाटा, सुर, पृ. 196
4. डॉ. अजित चव्हाण, कहानीकार महीपसिंह संवेदना और शिल्प, पृ0 98
5. डॉ. अजित चव्हाण, कहानीकार महीपसिंह संवेदना और शिल्प, पृ0 99
6. डॉ. महीपसिंह, संबंधों का सन्नाटा, कितने संबंध, पृ. 73
7. डॉ. महीपसिंह, संबंधों का सन्नाटा, अवश, पृ. 101
8. डॉ. महीपसिंह, संबंधों का सन्नाटा, कल, पृ. 223
9. डॉ. महीपसिंह, संबंधों का सन्नाटा, दिन, पृ. 276
10. डॉ. महीपसिंह, संबंधों का सन्नाटा, दिन, पृ. 277